डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 13.07.2020

व्याख्यान संख्या-11 (कुल सं. 47)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर।
को घटी ए वृषभानुजा वे हलधर के बीर।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

प्रस्तुत दोहे का प्रसंग श्रीकृष्ण और राधिका के स्वाभाविक प्रेम के प्रति सखियों की टिप्पणी का है। वस्तुतः इन दोनों के परस्पर मान करके रुठ जाने के कारण सखियाँ श्लेष अलंकार युक्त ऐसी बात करती है जिसके एक अर्थ से दोनों को बात चुभे भी और उन्हें अपनी गलती का एहसास हो तथा दूसरे अर्थ से उन दोनों के स्वाभाविक एवं गहन प्रेम की प्रतीति भी हो। इसी भाव से सखियाँ कहती हैं कि यह जोड़ी चिरजीवी हो, यह जोड़ी गहरे स्नेह से क्यों न जुड़े, क्योंकि इन दोनों में से घटकर कौन है अर्थात् कोई कम नहीं है। दोनों ही बराबर श्रेष्ठ हैं। एक ओर तो यह वृषभानु जैसे महापुरुष की पुत्री है और दूसरी ओर वे हलधर अर्थात बलराम जी जैसे प्रभावशाली पुरुष के भाई हैं।

इस अर्थ से सखियाँ दोनों की सहज भाव से श्रेष्ठजनोचित प्रशंसा करती हुई कहती हैं कि ये दोनों ही श्रेष्ठ हैं। अतः भले ही ये थोड़ी के लिए परस्पर रुष्ट हो गये हैं, परंतु शीघ्र ही इन में गंभीर प्रेम जुड़ जाएगा; जैसा कि श्रेष्ठ व्यक्तियों में होता है। इस कथन से दोनों के स्नेह भाव को बढ़ावा देकर उनका मान तथा रोष छुड़ाना चाहती हैं। परंतु, इसका दूसरा अर्थ चुभने वाला है। इस भाव से श्लेष के द्वारा इन्हीं शब्दों का बिल्कुल भिन्न अर्थ निकलता है, जो

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

इस प्रकार है:-

इन दोनों की जोड़ी चिरजीवी हो। यह जोड़ी गंभीर अर्थात चिरस्थायी स्नेह से क्यों न जुड़े ! हालाँकि वक्रोक्ति से कहना यह है कि यह जोड़ी चिरस्थायी स्नेह से कैसे जुड़ सकती है, क्योंकि इन दोनों में से कोई घटकर नहीं है। दोनों में एक ही समान आक्रोशित होने वाली पशुवृत्ति है जो कि समझाने बुझाने से नहीं मानते। यह तो वृषभानुजा (वृषभ अर्थात बैल की अनुजा अर्थात बहन है और वे हलधर अर्थात् बैल के भाई हैं। ऐसे में ये दोनों गंभीर स्नेह को क्या जाने !

इस अर्थ से सखियाँ परिहास पूर्वक यह कहना चाहती है कि दोनों को यदि अपना प्रेम चिरस्थायी रखना है तो अपनी अपनी इस प्रकार छोटी-छोटी बातों पर आक्रोशित हो जाने और परस्पर रूठ जाने की प्रवृत्ति छोड़ देनी चाहिए।

प्रस्तुत दोहे में श्लेष अलंकार के साथ-साथ वक्रोक्ति की छटा भी दर्शनीय है।